सत्ता अनुभव-मूलक है (Esse Est Percipi)

जड़ तत्व का खंडन करके बर्कले अपने सिद्धांत का प्रतिपादन करते हैं| उनके सिद्धांत का आधार सूत्र है- "सत्ता अनुभव-मूलक है" (Esse Est Percipi)| अर्थात उसी की सत्ता मानी जा सकती है जो अनुभव किया जा सकता है| इसके विपरीत उनकी कोई सत्ता नहीं है जिनका अनुभव संभव नहीं है| अनुभवकर्ता है आत्मा और अनुभव के विषय है प्रत्यय| अतः आत्मा और उसके प्रत्ययों के अतिरिक्त और किसी की सत्ता नहीं है| ईश्वर भी आत्म स्वरुप हैं, वे परमात्मा है| प्रत्यय अजड़ हैं| वे बाह्य पदार्थों के प्रतिबिंब या प्रतिकृति नहीं है| वे आत्मनिष्ठ हैं, बाह्य वस्तुनिष्ठ नहीं है| प्रत्यय बाह्य कोई विषय नहीं| जड़ तत्व की कोई सत्ता नहीं| प्रत्यय के दो रूप हैं- संवेदन और स्वसंवेदन| संवेदनों की सृष्टि ईश्वर करते हैं| स्वसंवेदनों की सृष्टि आत्मा करती है| बर्कले के अनुसार आत्मा और उसके प्रत्ययों के अतिरिक्त कोई सत्ता नहीं| हमारे प्रत्यय ही सत्य वस्तुएं हैं| बर्कले की प्रसिद्ध उक्ति है- " मैं वस्तुओं को प्रत्यय नहीं बनाता, मैं प्रत्ययों को वस्तु बना रहा हूं|" प्रत्यय ही सत्य विषय हैं और उनकी सत्ता आत्मा के बाहर नहीं है| संसार के समस्त दृश्य पदार्थ घट, पट, मेज, कुर्सी, पेड़-पौधे, सूरज, चांद, तारे आदि सब हमारे ही प्रत्यय हैं| सब आत्मा में विद्यमान हैं| प्रतीति का विषय होना या अनुभव किया जाना अस्तित्व का द्योतक है| मान लीजिए, मेरे सामने मेज रखी है| मेज कोई बाह्य जड़ पदार्थ नहीं है, वह प्रत्यय मात्र है और आत्मा की सृष्टि है| जब तक मैं मेज को देख रहा हूं उसका अस्तित्व है| किंतु जब मैं कमरे के बाहर चला जाऊंगा तो क्या मेज की सत्ता नहीं रहेगी? बर्कले का उत्तर है- अवश्य रहेगी| 'प्रतीति का विषय होना सत्ता का सूचक है'- इस वाक्य के अनुसार प्रतीति का विषय बनने का सामर्थ्य भी इसके अंतर्गत आ जाता है| यदि मैं कमरे में ना रहूं तो भी मेज की सत्ता बनी रहेगी, क्योंकि 1. यदि मैं कमरे में होता तो मुझे मेज की प्रतीति हो सकती थी, अर्थात मेज में मेरी प्रतीति का विषय बनने का सामर्थ्य विद्यमान है, 2. अन्य कोई व्यक्ति उस मेज की प्रतीति कर रहा हो, 3. ईश्वर को उस मेज की प्रतीति सदा हो रही है| अतः बर्कले के अनुसार प्रत्ययों की सत्ता बनी रहती है; क्योंकि उनमें प्रतीति के विषय बनने का सामर्थ्य है, क्योंकि कोई ना कोई जीव उनकी प्रतीति कर रहा है और क्योंकि ईश्वर को उनकी प्रतीति सदा हुआ करती है|

रूप रस गंध आदि संबंधी गुणों को लॉक आत्म निष्ठ इसलिए मानते हैं क्योंकि उनके अनुसार यह गुण अनुभव करता पर निर्भर करते हैं परंतु उस अर्थ में तथाकथित प्राथमिक गुण भी अनुभवकर्ता पर ही निर्भर करते हैं| एक ही दूरी किसी को बहुत अधिक और किसी को कम लगती तथा एक ही वस्तु किसी को अधिक ठोस और कड़ी तथा किसी को कम लगती है|

इसलिए सारे गुण अनुभवकर्ता के अनुभव पर ही निर्भर करते हैं, सभी उनके मन प्रत्यय हैं वस्तुएं गुणों के ही समूह हैं| इसलिए वस्तुएं अनुभवकर्ता कि मन के प्रत्यय हैं|

इस बात को बर्कले अपने प्रसिद्ध सूत्र "Esse est percipi) के द्वारा व्यक्त करते हैं जिसका अर्थ है कि वस्तुओं का अस्तित्व किसी भी अनुभवकर्ता द्वारा उसके अनुभव या प्रत्यक्ष किए जाने से भिन्न कुछ नहीं है और इसका साधारण अर्थ है कि वस्तुएं अनुभवकर्ता के मन के प्रत्ययों से भिन्न कुछ नहीं है और इसका अर्थ है वस्तु अनुभवकर्ता के मन के प्रत्ययों से भिन्न कुछ नहीं है| सत्ता दृश्यता है से तात्पर्य है कि केवल उन्हीं की सत्ता है जिनका इंद्रिय अनुभव संभव है, अनुभव के परे और किसी भी सत्ता से बर्कले इनकार करते हैं| बर्कले कहते हैं कि वस्तुओं का अस्तित्व अनुभवकर्ता के अनुभव पर निर्भर है| वे घोषणा करते हैं कि प्रत्यय से अलग पदार्थ नाम की कोई चीज नहीं है, अर्थात प्रत्यय ही पदार्थ हैं(to be is to be perceived)|